

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 9, जेम्स की किताब

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 9 है, पुस्तक सर्वेक्षण, जेम्स।

हम जेम्स की पुस्तक के सर्वेक्षण की ओर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। अब हमने जूड का सर्वेक्षण किया है। मैं जूड को एक नमूना सर्वेक्षण के रूप में उपयोग करना चाहता था क्योंकि जूड थोड़ा अधिक है, शायद उसके साथ काम करना थोड़ा आसान है, पुस्तक सर्वेक्षण की पद्धति के लिए एक उदाहरण के रूप में काम करने के मामले में थोड़ा अधिक उपयोगी है।

जेम्स थोड़ा अधिक शामिल है, लेकिन जूड के माध्यम से काम करने के बाद, मुझे लगता है कि हम आगे बढ़ने और जेम्स की किताब से निपटने के लिए तैयार हैं। आपमें से जो लोग अभी देख रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि आप इसे रोकना चाहेंगे और वास्तव में जेम्स को पढ़ेंगे, जेम्स के साथ उसी तरह का काम करें जैसा हमने आपको जूड के साथ करने का सुझाव दिया था। कहने का तात्पर्य यह है कि पुस्तक को पढ़ें और जेम्स में अवलोकनों और गतिविधियों का सर्वेक्षण करने में अपना हाथ आजमाएँ, और फिर वापस आएँ और जो मैंने पाया है उसकी तुलना मैं जो प्रस्तुत कर रहा हूँ उससे करें।

अब जब मैं विभिन्न पुस्तकों पर प्रस्तुति देता हूँ, इस मामले में जेम्स, मैं किसी भी तरह से यह आभास नहीं देना चाहता कि मैं जो प्रस्तुत कर रहा हूँ वह सही उत्तर है और जहां तक आप देख सकते हैं, उदाहरण के लिए, संरचना किताब के बारे में मुझसे अलग, कि आप ग़लत हैं। यह वास्तव में मेरे द्वारा पारदर्शी तरीके से प्रस्तुत करने का मामला है। एक तरह से, दूसरे शब्दों में, यह उस पद्धति के सिद्धांतों का उदाहरण देने की कोशिश करता है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं।

लेकिन फिर भी, जब मैं प्रस्तुत करता हूँ, तो मैं पारदर्शी तरीके से प्रस्तुत करता हूँ कि मैंने क्या पाया और क्यों पाया। और इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह मेरे सही उत्तर देने का मामला नहीं है, और यदि आप इससे असहमत हैं तो आप ग़लत हैं। ऐसा बिल्कुल नहीं है।

लेकिन सामान्य सामग्रियों के संदर्भ में, फिर से, हमारे पास यहां एक पत्र है, और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एक बार फिर, हालांकि हमारे पास लोगों का कुछ संदर्भ है, विशेष रूप से, निश्चित रूप से, इब्राहीम और राहाब, लेकिन अय्यूब और एलियाह का भी, जो वास्तव में है यह इन लोगों के बारे में नहीं है। यह सामान्य सामग्रियों के संदर्भ में, पुस्तक की सामग्री के फोकस के संदर्भ में जीवनी संबंधी नहीं है, बल्कि पुस्तक की सामग्री विचारों और विशेष रूप से, निश्चित रूप से, ज्ञान और इसी तरह की धारणा पर काफी स्पष्ट रूप से केंद्रित है। इसलिए, सामान्य सामग्रियों को हम वैचारिक मानते हैं।

यहां शीर्षकों और अध्यायों के संभावित शीर्षकों के लिए मेरे सुझाव हैं। और फिर, पुस्तक की संरचना के संदर्भ में, पुस्तक की मुख्य इकाइयों और उप-इकाइयों की पहचान करना, टूटना, और समग्र रूप से पुस्तक में संचालित प्रमुख संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में, जेम्स एक चुनौती है। टूटने का वस्तुतः, जेम्स की पुस्तक की रैखिक संरचना के संबंध में विद्वानों के बीच कोई सहमति नहीं है।

लेकिन एक बार फिर, मैं बताऊंगा कि मैं इसे कहां देखता हूँ और क्यों। हालाँकि, मैं कह सकता हूँ कि यह बिल्कुल स्पष्ट है, और स्पष्ट अवलोकन करके शुरुआत करना एक अच्छा विचार है, कि 1:1 एक पत्र-संबंधी अभिवादन या अभिवादन है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या हमारे पास यहां कोई ऐतिहासिक निष्कर्ष है, और यदि हां, तो यह कहां से शुरू होता है, लेकिन कम से कम परिचय बहुत स्पष्ट है।

और इसलिए, जैसा कि मैं सुझाव दे रहा हूँ, हमारे पास 1:1 में अभिवादन है। हमारे पास 5.19 से 20 तक की अंतिम सलाह है, हालाँकि, जैसा कि हम देखेंगे जब हम अध्याय 5 की व्याख्या तक पहुँचते हैं, 5:19 से 20 तक को वास्तव में 5.12 से 18 के साथ काफी हद तक जुड़ते हुए देखा जा सकता है। इसलिए, ऐसा नहीं है यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि आपके पास वहां एक महत्वपूर्ण ब्रेक है, लेकिन हम सुझाव दे रहे हैं कि यह संभव है। पत्र के मुख्य भाग के संदर्भ में, मैं 1.27 और 2.1 के बीच प्रमुख विराम देखता हूँ। 1.2 से 1.27 में, हमारे पास वह है जिसका हम उल्लेख कर सकते हैं और जिसे कुछ लोगों ने जेम्स की पुस्तक के प्रस्ताव के रूप में संदर्भित किया है।

मैं इसे परीक्षणों और प्रलोभनों तथा ज्ञान और वचन के दोहरे संसाधनों के माध्यम से धोखे की संभावना पर ईसाई जीवन की विजय के संबंध में घोषणाओं और निर्देशों के रूप में वर्णित करता हूँ। जैसा कि मैंने यहां नीचे उल्लेख किया है, 1:2 से 2:7 के बारे में बात करते हुए, जेम्स, मुझे ऐसा लगता है कि यहां अध्याय 1 में पुस्तक के लगभग सभी प्रमुख मुद्दों को सामान्य तरीके से पेश किया गया है और यह के संदर्भ में किया गया है। ज्ञान और शब्द के दोहरे संसाधनों के माध्यम से परीक्षणों और प्रलोभनों और धोखे की संभावना पर ईसाई जीवन की विजय। मैंने यहां उल्लेख किया है कि ऐसे आठ मुद्दे हैं जिन्हें जेम्स 1:2 से 27 तक सामान्य तरीके से प्रस्तुत करता है, जिसके बाद वह आगे बढ़ता है और पुस्तक के शेष भाग में प्रत्येक मामले में विस्तार करता है, जिसे मैं चुनौतियों के संबंध में तर्क और उपदेश कहता हूँ। ईसाई जीवन में।

बुद्धि को अध्याय 1, श्लोक 5 से 8 में सामान्य तरीके से पेश किया गया है, और फिर विशेष रूप से 3:13 से 18 में विकसित किया गया है। अमीरों के इस पूरे व्यवसाय को 1:9 से 11 में सामान्य तरीके से पेश किया गया है, और फिर वह इसका विस्तार 2.1 से 13 और 5:1 से 6 में किया गया है। वास्तव में, हाँ, हम यही कहेंगे। हम वास्तव में 4:13 से 5:6 तक शामिल कर सकते हैं, लेकिन उन कारणों से जो बाद में स्पष्ट हो जाएंगे, मैं वास्तव में नहीं सोचता कि अध्याय 4 का अंत विशेष रूप से अमीरों के लिए है, बल्कि इसका संबंध उन शिष्यों या ईसाइयों से है जिनके पास साधन हैं, लेकिन वह उन्हें अमीर के रूप में संदर्भित नहीं करना चाहता।

वह सामान्य तरीके से दिव्य उपहारों के बारे में बात करता है, 1:16 से 18 तक सामान्य तरीके से उसका परिचय देता है, और फिर उसे विकसित करता है, कोई कह सकता है, 4:1 से 10 और 5:13 से 18 में उस विवरण, चर्चा को विशिष्ट बनाता है। 1:19 से 25 तक सक्रिय विश्वास की धारणा को सामान्य तरीके से प्रस्तुत करता है और फिर 2:1 से 26 में उस पर विस्तार करता है। वह 1:26 में जीभ के मुद्दे को सामान्य तरीके से प्रस्तुत करता है और फिर उस पर विस्तार करता है जिस तरह से उसने 1:26 में जो कहा है उसे 3:1 से 4:12 में स्पष्ट रूप से विकसित करता है। वह 1:27 में सामान्य रूप से सामाजिक चिंता का परिचय देता है, अर्थात् गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करता है और फिर 2:1 से 26 तक उसका विस्तार करता है।

वह अध्याय 1 श्लोक 2 से 4 में पीड़ा के मुद्दे को सामान्य तरीके से पेश करता है। वह इसे श्लोक 12 में फिर से उठाता है और फिर 5:1 से 18 में इसका विस्तार करता है और वह 1.5 में प्रार्थना की धारणा को सामान्य तरीके से पेश करता है। 8 के माध्यम से और फिर 4.1 से 3 और 5:13 से 18 तक इसका विस्तार होता है। संयोग से, यह हो सकता है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, कि जीभ न केवल 3:1 से 4:12 में विकसित हुई है, बल्कि शायद 5:12 से 18 तक या शायद 20 तक भी। इसलिए, मैं कहता हूँ कि अध्याय 1, मुझे लगता है, अधिक सामान्य है।

यह एक ऐसी भाषा का उपयोग करने वाला एक प्रकार का प्रस्ताव है जिसे हम वास्तव में संगीत से उधार लेते हैं, विशेष रूप से सिम्फनी से, जहां एक प्रस्ताव में अक्सर शामिल होता है, आप जानते हैं, एक साथ बांधना, एक साथ बुनाई, संक्षेप में, संक्षिप्त तरीके से, धुनें जो अधिक विकसित होंगी संगीत रचना में पूरी तरह बाद में। और ऐसा प्रतीत होता है कि यह उस प्रकार की चीज़ है जो आपके यहाँ है। इसलिए, वह इन सभी मुद्दों को यहां इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है कि हम उनमें से प्रत्येक को बाद में पत्री के भीतर विकसित कर रहे हैं।

खैर, यदि यह मामला है, तो 2:1 से 5:18 तक, हमारे पास तीन उपइकाइयाँ होंगी। अध्याय 2 में, हमारे पास गरीबों के इलाज के संबंध में तर्क और उपदेश हैं, जिन्हें वह विश्वास और कार्यों की धार्मिक चर्चा पर आधारित करता है। यहां गरीबों के प्रति समर्पण पर जोर दिया गया है, जिसका परिणाम पक्षपात और निष्क्रियता को अस्वीकार करना है।

फिर, 3:1 से 4:12 में, युद्धरत भावनाओं के खिलाफ संघर्ष के संबंध में तर्क और उपदेश हैं, जिसमें भाईचारे के प्रति वास्तविक समर्पण और समुदाय के भीतर दूसरों के लिए हानिकारक चीजों की अस्वीकृति, अशुद्ध भाषण की अस्वीकृति शामिल है। और कड़वी ईर्ष्या का। फिर 4:13 से 5:18 में, परमेश्वर की संप्रभु इच्छा और कार्रवाई के प्रति धैर्यपूर्वक समर्पण के संबंध में तर्क और उपदेश। निस्संदेह, इसमें ईश्वर के कार्य के प्रति समर्पण और उसका परिणाम, आत्मनिर्भरता और स्व-शासन की अस्वीकृति शामिल है।

यह कम से कम रचना को, जेम्स के तर्क के प्रवाह को समझने का एक तरीका है। खैर, प्रमुख संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में, मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि हमारे पास 1:1 में एक प्रारंभिक वक्तव्य, एक पृष्ठभूमि वक्तव्य है। यह वास्तव में बहुत छोटा है, हालाँकि यह केवल कंकाल नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि, इसमें कुछ ऐसे तत्व शामिल हैं जो आपको हमेशा इन शुभकामनाओं में नहीं मिलते हैं जो पुस्तक की पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण हैं।

लेखक व्यक्ति के संदर्भ में खुद को जेम्स के रूप में पहचानता है और अपनी स्थिति को एक सेवक, डोलोस, या भगवान और प्रभु यीशु मसीह के दास के रूप में वर्णित करता है। यहां प्राप्तकर्ताओं के संबंध में वह जो कहते हैं वह बहुत दिलचस्प है और किसी को वास्तव में पत्र को समझने के लिए महत्वपूर्ण सोचना चाहिए। वह पाठकों को 12 जनजातियों और उनके स्थान या फैलाव की स्थिति, फैलाव की 12 जनजातियों, और निश्चित रूप से, फिर उचित पत्र के रूप में पहचानता है।

मैं यहां इन विभिन्न प्रश्नों को पढ़ने के लिए अपना समय नहीं लूंगा, लेकिन आप देख सकते हैं कि मैं ऐसे प्रश्न पूछता हूँ जो विशेष रूप से पृष्ठभूमि या तैयारी कथन के रूप में 1:1 की ओर निर्देशित होते हैं और पृष्ठभूमि के भीतर इन तत्वों के व्याख्यात्मक महत्व की जांच करने का प्रयास करते हैं। कथन, विशेष रूप से, मैं कह सकता हूँ, फैलाव की 12 जनजातियों का यह पूरा व्यवसाय। इससे पहले कि हम जेम्स की वास्तविक व्याख्या में उतरें, मैं थोड़ा बाद में कहना चाहता हूँ कि इसका क्या मतलब हो सकता है, उस तरह के पदनाम का क्या मतलब हो सकता है और इसका क्या महत्व है। फिर, दूसरे रिश्ते के संदर्भ में, मैंने पहले ही सुझाव दिया है कि संभवतः 1.2 से 27 तक परीक्षणों और प्रलोभनों पर ईसाई जीवन की नैतिक विजय और एक ओर ज्ञान के माध्यम से संभावित धोखे पर सामान्य घोषणाएं और निर्देश शामिल हैं और दूसरी ओर दूसरे पर शब्द।

जब हम खंड के सर्वेक्षण और इसकी व्याख्या की जांच करेंगे तो हम इसे अधिक विशिष्ट और अधिक विस्तार से देखेंगे। लेकिन आपके पास यहां 1.5 से 8 में प्रस्तुत बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि आप में से किसी के पास बुद्धि की कमी है, तो उसे ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जो सभी मनुष्यों को उदारतापूर्वक और बिना किसी उलाहना के देता है, और वह उसे दी जाएगी। परन्तु वह बिना सन्देह किए विश्वास से मांगे, क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।

क्योंकि उस मनुष्य को यह न सोचना चाहिए, कि जो मनुष्य सब चालचलन में अस्थिर है, वह प्रभु से कुछ भी प्राप्त करेगा। और फिर, जैसा कि मैं कहता हूँ, संभव बनाने में शब्द की महत्वपूर्ण भूमिका, परीक्षणों और प्रलोभनों और संभावित धोखे पर ईसाई जीवन की नैतिक विजय के बारे में इन निर्देशों की पूर्ति वास्तव में 1:23 से 25 में पाई जाती है। लेकिन कर्ता बनें वचन के विषय में, और सुननेवालोंको नहीं, जो केवल अपने आप को धोखा देते हैं।

क्योंकि यदि कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुख दर्पण में देखता है। क्योंकि वह अपने आप को देखता है, और चला जाता है, और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था। परन्तु जो सिद्ध व्यवस्था, अर्थात् स्वतन्त्रता की व्यवस्था पर दृष्टि रखता है, और दृढ़ रहता है, और सुननेवाला और भूलनेवाला नहीं, परन्तु करनेवाला बनकर काम करता है, वह अपने काम में धन्य होगा।

इसलिए, ज्ञान और शब्द दोनों को वास्तव में संसाधनों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो उस तरह के जीवन की पूर्ति की ओर ले जाएगा जिसका वह अन्यथा यहां अध्याय एक में आग्रह करता है। जैसा कि मैंने कहा, रिश्ते को समझने का यह कम से कम एक तरीका है। और निस्संदेह, 2:1

से 5:20 में, हमारे पास उचित ईसाई व्यवहार के संबंध में विशिष्ट तर्क और उपदेश होंगे जिनमें गरीबों के साथ व्यवहार, युद्धरत भावनाओं के खिलाफ संघर्ष, धैर्य, संप्रभु इच्छा के प्रति समर्पण और ईश्वर की कार्रवाई शामिल होगी। .

लेकिन इस प्रक्रिया में, वह वास्तव में उन तत्वों को लाता है जिन्हें वह अध्याय एक में सामान्य तरीके से पेश करता है और उन्हें विकसित करता है, जैसा कि मैंने पहले ही 2:1 से 5:20 में दिखाने की कोशिश की है। प्रसंगवश, मैं यहाँ कुछ का उल्लेख करना चाहूँगा। मुझे इसका उल्लेख करना चाहिए। यह उतनी ही अच्छी जगह है जितनी उल्लेख करने लायक कोई जगह है।

पुस्तक सर्वेक्षण के संबंध में मेरा अपना पूर्वाग्रह यह है कि जो मैंने यहां करने की कोशिश की है, उसे करने से शुरुआत करें और वह है पाठ के साथ सीधे काम करना, संरचनात्मक विश्लेषण के संदर्भ में हम जो भी कर सकते हैं, प्रत्यक्ष रूप से करें। पाठ का अध्ययन और, आप जानते हैं, बाकी सब भी, जिसमें पाठ के प्रत्यक्ष अध्ययन से उच्च महत्वपूर्ण डेटा की पहचान करना और इसी तरह की चीजें शामिल हैं, केवल पाठ के साथ बने रहना, द्वितीयक स्रोतों पर न जाना, जैसा कि हम सर्वेक्षण करते हैं। लेकिन जहां तक आपके पास संसाधनों तक पहुंच है तो मेरा पूर्वाग्रह सर्वेक्षण से तुरंत बाहर आ रहा है। और मैं जानता हूँ कि आपमें से कुछ लोगों के पास इस प्रकार के संसाधनों तक पहुंच नहीं हो सकती है, लेकिन जहां तक आपके पास संसाधनों तक पहुंच है, तुरंत आगे बढ़ें और पुस्तक के परिचय की एक या दो या तीन चर्चाएं पढ़ें।

और मैं इसके बारे में थोड़ी देर बाद उन संसाधनों के संदर्भ में और अधिक कहने जा रहा हूँ जिनका उपयोग किया जा सकता है, लेकिन इस तरह की चीजों के लिए डिफ़ॉल्ट संसाधन न्यू टेस्टामेंट परिचय है, जिसका उद्देश्य और फोकस पृष्ठभूमि मुद्दों पर चर्चा करना है और यहां तक कि विभिन्न बाइबिल पुस्तकों की संरचना। और यह वास्तव में छात्रवृत्ति के साथ बातचीत में शामिल होने का एक तरीका है, सर्वेक्षण के माध्यम से पाठ के प्रत्यक्ष अध्ययन में आपने स्वयं क्या पाया है और वे इसके संबंध में क्या कहते हैं, के बीच एक बातचीत है। अब, यदि आप जेम्स के साथ ऐसा करते हैं तो एक चीज़ जो आप पाएंगे वह यह है कि कम से कम कई विद्वान हैं जो बताते हैं कि यह ग्रीको-रोमन दुनिया और यहूदी में पत्र लेखन की, पत्र-लेखन की एक विशेषता थी। विश्व में भी, पहली शताब्दी के दौरान, शुरुआत में किसी पुस्तक के प्रमुख विषयों को सामान्य तरीके से प्रस्तुत करना और फिर बाद में उन विषयों को पुस्तक के भीतर विकसित करना।

और इसलिए, उदाहरण के लिए, ल्यूक टिमोथी जॉनसन, जिन्होंने जेम्स की संरचना पर बहुत उपयोगी चर्चा की है, इस बारे में बात करते हैं कि यह उस तरह की चीज़ है जिसकी पहली सदी के पाठकों ने अपेक्षा की होगी, और इसकी तलाश में होंगे। और इसलिए, हालाँकि इस तरह की चीज़ आधुनिक लोगों के लिए इतनी स्पष्ट नहीं लग सकती है, यह पहली सदी के लोगों के लिए बहुत अधिक स्पष्ट रही होगी जिनकी पढ़ने की इस तरह की अपेक्षा थी, उस समय पत्रियों के संबंध में इस तरह की संरचनात्मक अपेक्षा थी। ऐसा नहीं है कि प्रत्येक पत्र, वास्तव में, स्पष्ट रूप से ऐसा है कि प्रत्येक नए नियम के पत्र को इस तरह से संरचित नहीं किया गया है, लेकिन अक्सर इसी तरह से पत्रियों को संरचित किया गया था, और इसलिए लोग, कोई कह सकता है, इस प्रकार को देखने के लिए तैयार थे। किसी चीज़ को पहचानना और उसे पहचानना, भले ही हमारी नज़र में वह सतह पर इतना स्पष्ट न हो।

ठीक है, एक और संरचनात्मक विशेषता जो हमारे यहां है, और एक बार फिर, मैं इन सबके संबंध में, इन सभी चीजों के संबंध में प्रश्न उठाता हूं, लेकिन एक और संरचनात्मक संबंध जो हमारे पास बहुत अच्छी तरह से हो सकता है वह कारण और पुष्टि की पुनरावृत्ति है, और यह कार्य-कारण और पुष्टि की एक विशिष्ट प्रकार की पुनरावृत्ति है जो हम अक्सर पत्र-संबंधी सामग्री में या उससे भी अधिक व्यापक रूप से विवेचनात्मक सामग्री में पाते हैं। इसमें अनिवार्य और संकेत के बीच निरंतर आगे और पीछे जाना शामिल है, और हम इसे हॉर्टेरी कहते हैं। वहां हुई त्रुटि के लिए मुझे क्षमा करें; मैं हॉर्टेरी पैटर्न को नहीं समझ पाया। हॉर्टेरी, निश्चित रूप से, उपदेश शब्द से आया है, जिसका अर्थ है आदेश, और यह बिल्कुल इसी तरह की चीज़ को संदर्भित करता है।

बार-बार, धार्मिक घोषणाएँ कारण बनती हैं, अर्थात्, उपदेश की ओर ले जाती हैं, और कभी-कभी एक आंदोलन कारण से होता है, धर्मशास्त्रीय घोषणा प्रभाव से, उपदेश होता है, और अन्य समय में, यह प्रभाव से होता है, उपदेश कारण की ओर होता है। वास्तव में, यह हॉर्टेरी पैटर्न एक श्रृंखला की तरह की चीज़ है, इसलिए अक्सर आपके पास जो कुछ होता है जब आपके पास जेम्स में होता है, तो आपके पास एक संकेत होगा, यह एक का रूप या तरीका है घोषणात्मक कथन, जो सांकेतिक है, वह धार्मिक कारण होगा, जो तब कार्य-कारण के माध्यम से अनिवार्य आदेश की ओर ले जाता है। तो, इसे कोई जीवनशैली की मांग कह सकता है, और यह अनिवार्यता स्वयं न केवल पूर्ववर्ती संकेतक का प्रभाव है, बल्कि निम्नलिखित संकेतक, फिर से, धार्मिक कारण से प्रमाणित होती है, जो फिर अगली अनिवार्यता, जीवनशैली की मांग और आगे का कारण बनती है। और आप आगे बढ़ें ताकि एक ही संकेत पूर्ववर्ती अनिवार्यता की पुष्टि कर सकें और सफल अनिवार्यता का कारण बन सकें।

अब, इसका निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तव में, एक बात के लिए, सोच या अभिविन्यास, धार्मिक दृढ़ विश्वास और जीवन, अभिव्यक्ति और जीवन में अनुवाद के बीच संबंध से संबंधित है; हालाँकि, इसका संबंध वास्तव में ईसाई जीवन की संरचना से है। और इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, इस तरह की चीज़ संदेश और यहां तक कि धर्मशास्त्र और ईसाई जीवन की धारणा को प्राप्त करने के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है जो हमारे पास पुस्तक में है। फिर से, मैं इस संरचनात्मक विशेषता के संबंध में निश्चित, तर्कसंगत और निहितार्थ वाले प्रश्न उठाऊंगा, और फिर, मैं उन सभी विशिष्ट प्रश्नों को पढ़ने के लिए हमारे वीडियो का समय नहीं लूंगा।

फिर, उससे परे, मुझे लगता है, हमारे पास, उचित ईसाई व्यवहार के बीच एक आवर्ती विरोधाभास है, जिसे जेम्स संदर्भित करता है, मुझे लगता है, अनिवार्य रूप से, भगवान के साथ दोस्ती के रूप में, एक वाक्यांश जो आपको इस पुस्तक में दो बार मिलता है। आप इसे ढूँढ लेंगे। सबसे पहले, 2:23 में, अब्राहम ने ईश्वर पर विश्वास किया, उत्पत्ति 15 से उद्धृत करते हुए, अब्राहम ने ईश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता मानी गई। और फिर, जेम्स आगे बढ़ता है और टिप्पणी करता है, और उसे भगवान का मित्र कहा जाता है।

और फिर, अध्याय 4, श्लोक 4 में, क्या आप नहीं जानते कि संसार से मित्रता ईश्वर से शत्रुता है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र बनना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का शत्रु बनाता है।

तो, वह ईसाई, उचित ईसाई व्यवहार वास्तव में जेम्स के पत्र में अंतिम वास्तविकता की ओर उन्मुख है, और वह ईश्वर है, ईश्वर के साथ मित्रता, जबकि अनुचित व्यवहार, मेरे ईसाई उद्धरण चिह्न वहां रखता है, लेकिन अनुचित व्यवहार, वह के संदर्भ में वर्णन करता है दुनिया से दोस्ती। अब, निस्संदेह, यह विरोधाभास उपदेशों और धार्मिक तर्कों दोनों में, हर जगह और बार-बार पाया जाता है।

यह संकेतात्मक और अनिवार्य के बीच के अंतर को पार करता है, और आप यहां देख सकते हैं कि पत्री के भीतर यह कितना प्रभावी है। अब, यह अक्सर इंगित किया गया है, और निश्चित रूप से, यह बिल्कुल स्पष्ट है, कि जेम्स के पास पुराने नियम और इंटरटेस्टामेंटल अवधि की ज्ञान परंपरा के साथ बहुत कुछ समान है, और यह पुराने नियम में ज्ञान निर्देश की विशेषताओं में से एक था। और यहूदी धर्म में, मूलतः दो तरीकों की धारणा है। और इसलिए, विचार यह है कि व्यवहार और सोच टुकड़े-टुकड़े नहीं हैं, कि मूल रूप से दो तरीके हैं, और आप या तो एक रास्ते पर चल रहे हैं, एक रास्ते पर, या आप दूसरे रास्ते पर चल रहे हैं, और उनमें से प्रत्येक में एक शामिल है सोच और व्यवहार की जटिलता ताकि तरीके एक-दूसरे के विपरीत हों।

फिर उससे आगे, और जैसा कि मैं कहता हूं, आपके पास जो है, जो आपको यहां जेम्स में दिखता है, वही हम यहां उठा रहे हैं, और फिर से, हम सवाल उठाते हैं। मैं चाहता हूं कि आपकी उन तक पहुंच हो, लेकिन फिर भी, मैं उन सभी को पढ़ने के लिए समय नहीं निकालूंगा। अब, यह संभव है कि हमारे यहां जेम्स में चरमोत्कर्ष हो, और जिस तरह से मैं इसे देखता हूं, इसमें तुलना शामिल हो सकती है।

यह वास्तव में पुस्तक में 5:19 से 20 तक के अंतिम कथन से संबंधित है। मेरे भाइयों, यदि तुम में से कोई सत्य से भटक जाए और कोई उसे लौटा लाए, तो जान ले कि जो कोई किसी पापी को गलती से लौटा लाता है। उसका मार्ग उसके प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और बहुत से पापों को ढांप देगा। तो, 1-2 से 5:18 में, हमारे पास जेम्स के उपदेश हैं जिनका उद्देश्य अपने पाठकों को सत्य के मार्ग पर और त्रुटि से दूर निर्देशित करना है।

और वैसे, यह स्पष्ट रूप से मामला है कि जब वह सत्य और त्रुटि के बारे में बात करता है, तो वह बात नहीं कर रहा है, निश्चित रूप से विशेष रूप से धार्मिक सत्य और धार्मिक त्रुटि के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि अधिक समग्र रूप से बात कर रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि, सत्य का संबंध सोच और व्यवहार दोनों से है जो सोच से उत्पन्न होता है, सही सोच से, और त्रुटि का संबंध गलत सोच से होता है और व्यवहार से जो गलत सोच से उत्पन्न होता है। तो, सत्य और त्रुटि का यह व्यवसाय केवल संज्ञानात्मक या बौद्धिक नहीं है; यह समग्र है।

लेकिन जेम्स के उपदेशों का उद्देश्य अपने पाठकों को सत्य के मार्ग पर और त्रुटि से दूर निर्देशित करना है, जिससे 5:19 से 20 में यह चरम कथन आता है, जिसमें पाठकों के लिए अंतिम सलाह शामिल है, पाठकों को वही देहाती कार्य जारी रखने के लिए, उसी प्रकार की चीजें लगातार चल रही हैं जो जेम्स इस पत्री में करने का प्रयास कर रहा है। यहीं आपको तुलना मिलती है। निर्देशन और सुधार के उसी देहाती कार्य को जारी रखें जैसा कि जेम्स ने पुस्तक में ही किया है, और

पाठकों के लिए चर्च में दूसरों की ओर से इस मंत्रालय का लाभ उठाएं जब तक उन्हें इसकी आवश्यकता हो।

5:19 से 20 के अनुसार पुस्तक में देहाती देखभाल और निर्देश का वही अभ्यास पाठक की वास्तविक दुनिया में दूसरों द्वारा किया जाना है। फिर भी, हम जो कुछ भी देखते हैं और सर्वेक्षण करते हैं वह अस्थायी है। इसका मतलब यह नहीं है कि दिन के अंत में यह सही साबित होगा, लेकिन वास्तव में सर्वेक्षण में जो बात आवश्यक है वह यह है कि आपके द्वारा की गई टिप्पणियाँ विश्वसनीय हों।

व्याख्या सहित अध्ययन के बाद के चरणों के आधार पर यह पता चल सकता है कि पुस्तक सर्वेक्षण में आपके द्वारा की गई कुछ टिप्पणियाँ आपके अनुसार सही नहीं थीं और उन्हें बदलने की आवश्यकता है। इसमें कोई समस्या नहीं है। प्रक्रिया, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, स्वयं-सुधारात्मक है, लेकिन आपको कहीं न कहीं से शुरुआत करनी होगी, और सर्वेक्षण पुस्तक का एक अभिविन्यास है।

आप इन चीजों का यथासंभव सर्वोत्तम अर्थ निकाल सकते हैं, यह जानते हुए कि जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, आपके पास किसी भी प्रकार की गलत टिप्पणियों को सुधारने का भरपूर अवसर होता है। और फिर, हमारे पास वहां प्रश्न हैं जिन्हें मैं उठाऊंगा, और आप रुक सकते हैं और उन्हें देख सकते हैं और यदि आप चाहें तो उन पर गौर कर सकते हैं, लेकिन मैं अब उन्हें पढ़ने के लिए समय नहीं लूंगा। तो यह मूलतः पुस्तक के व्यापक सर्वेक्षण के बारे में मेरी समझ है।

प्रमुख बनाम रणनीतिक क्षेत्र जो प्रमुख संरचनात्मक संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1:1, निश्चित रूप से, तैयारी की प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करेगा। मुझे ऐसा लगता है कि 1:5 से 8, 1:12 से 18, और 1:22 से 25, उपकरणकरण के साथ विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यहाँ, निःसंदेह, आप 1:5 से 8 में ज्ञान के इस व्यवसाय को और 1.22 से 25 में शब्द को सीखते हैं, लेकिन 1:12 से 18 तक परीक्षण और प्रलोभन के इस पूरे व्यवसाय को भी उठाते हैं, जो प्रमुख रूप से विकसित होते हैं बाकी किताब में। यह कार्य-कारण और पुष्टि की पुनरावृत्ति का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो कि एक प्रेरक पैटर्न है जिसका हमने अभी वर्णन किया है, और दो तरीकों के बीच विरोधाभास की पुनरावृत्ति, जो निश्चित रूप से, इन छंदों में भी दर्शायी गई है। 2.14 से 26 तक, यह यहां आस्था की भूमिका की चर्चा है।

विश्वास और कार्य-कारण और पुष्टि की पुनरावृत्ति और विरोधाभास की पुनरावृत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, और फिर 5:19 से 20 तक, यकीनन, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, तुलना के साथ चरमोत्कर्ष है, और वह मार्ग उस संरचना के आधार पर एक महत्वपूर्ण मार्ग होगा। फिर उच्च आलोचनात्मक प्रश्नों पर आधारित डेटा के संदर्भ में, लेखक कम से कम अपनी स्थिति या कार्य के संदर्भ में खुद को जेम्स के रूप में पहचानता है। वह स्वयं को ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह का सेवक बताता है।

हम यहां कुछ भी नहीं मानते हैं, इसलिए हम ध्यान दें कि वह एक यहूदी रहा होगा। हमारे पास कानून का बार-बार संदर्भ और पुराने नियम के पात्रों का बार-बार संदर्भ है। अब, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि एक गैर-यहूदी लेखक हिब्रू धर्मग्रंथों का उपयोग कर सकता है, और मैं इसका लगातार संकेत दूंगा, लेकिन तथ्य यह है कि ऐसा होता है, कि लेखक इन तरीकों से इस प्रकार के संदर्भ बनाता है, और यह आवृत्ति एक यहूदी लेखक का सुझाव हो सकता है।

निःसंदेह, ज्ञान के संदर्भ भी बार-बार मिलते हैं, जो फिर से एक यहूदी लेखक का संकेत हो सकता है। प्राप्तकर्ताओं को फैलाव में स्थान के संदर्भ में वर्णित किया गया है, लेकिन हम वास्तव में यह नहीं जानते हैं कि इसका क्या मतलब है और क्या वह फैलाव का उपयोग शाब्दिक, भौगोलिक तरीके से या धार्मिक तरीके से कर रहा है। आप देखते हैं, जब आप पुस्तक सर्वेक्षण के बिंदु पर उच्च महत्वपूर्ण डेटा की पहचान कर रहे होते हैं, तो आपके पास कुछ व्याख्यात्मक कदम उठाने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है जिसे आप वास्तव में इस स्तर पर करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि पुस्तक में उच्च महत्वपूर्ण डेटा सहित हम जो कुछ भी पहचानते हैं और वह डेटा इन पृष्ठभूमि मुद्दों के संदर्भ में क्या इंगित कर सकता है, वह अस्थायी है। लेकिन फिर भी, जब वह 1 :1 में यहां फैलाव में कहता है तो वह उनके भौतिक स्थान के बारे में बात कर सकता है। हो सकता है ये यहूदी रहे हों। बेशक, 1:1 में फैलाव की बारह जनजातियों का संदर्भ है, हालाँकि इसे रूपक के रूप में भी समझा जा सकता है और जरूरी नहीं कि यह जातीय या नस्लीय रूप से हो।

2.21 में इब्राहीम को हमारा पिता कहा गया है। अब फिर, आमतौर पर, निश्चित रूप से, पॉल और जेम्स के बीच काफी अंतर किया गया है, खासकर अध्याय 2 में। हम उसी के बारे में बात करने जा रहे हैं। लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कम से कम पॉल इब्राहीम को केवल यहूदियों का ही नहीं, बल्कि विश्वास रखने वाले सभी लोगों का पिता मानता है। तो, इसका मतलब यह नहीं होगा कि ये यहूदी पाठक या यहूदी ईसाई पाठक थे, लेकिन यह उस ओर इशारा कर सकता है।

वे विशेष रूप से अमीरों के हाथों परीक्षणों और उत्पीड़न को सहन कर रहे होंगे, और चर्च में गंभीर गुटबाजी का अनुभव कर रहे होंगे। मैं केवल यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि विशेष रूप से न्यू टेस्टामेंट छात्रवृत्ति में एक गहरी जड़ें जमा चुकी प्रथा है, जो इस आधार पर संचालित होती है कि यदि कोई लेखक, विशेष रूप से एक पत्र-लेखक लेखक, किसी बात का बहुत अधिक उल्लेख करता है, किसी बात का मुद्दा बनाता है, तो यह इंगित करता है कि यह पाठकों के बीच या तो एक समस्या थी या एक संभावित समस्या थी। इसे मिरर रीडिंग कहते हैं।

हाल ही में उस पूरी प्रथा की काफ़ी आलोचना हुई है। और इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि सिद्धांत रूप में, निश्चित रूप से, यह निश्चित रूप से सच है कि सिर्फ इसलिए कि एक लेखक किसी चीज़ को मुद्दा बनाता है इसका मतलब यह नहीं है कि यह चर्च में एक समस्या थी। यह बस कुछ ऐसा हो सकता है जिसके बारे में सुनना और जानना वह सभी ईसाइयों के लिए महत्वपूर्ण मानता है, चाहे उनकी स्थिति कुछ भी हो।

लेकिन यह प्राप्तकर्ताओं के बीच किसी समस्या की ओर इशारा कर सकता है। और इसलिए, इसीलिए हम इसका उल्लेख करते हैं और बहुत ही अस्थायी भाषा का उपयोग करके इसके बारे में बात करते हैं। वे शायद परीक्षण और उत्पीड़न सह रहे होंगे, खासकर अमीरों के हाथों।

और संयोगवश, उनके कुछ ऐसे बयान हैं जो वास्तव में सुझाव देते हैं कि मामला ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए, 2.6, क्या वे अमीर नहीं हैं जो आप पर अत्याचार करते हैं? क्या ये वही नहीं हैं जो तुम्हें अदालत में घसीटते हैं? क्या वे ही नहीं, जो उस आदर नाम की निन्दा करते हैं जो तुम्हारे लिये कहा गया था? और ऐसा ही, जो कम से कम सतही तौर पर स्थितिजन्य लगता है और हो सकता है कि चर्च में गंभीर गुटबाजी का अनुभव हो रहा हो। फिर, वह इसके बारे में बात करता है और 3.1 से 4.12 में इस पर जोर देता है। लिखने के अवसर के संदर्भ में और इस पुस्तक को लिखने के लिए किस चीज़ ने प्रेरित किया होगा, एक बात संभवतः यह थी कि अमीरों के हाथों परीक्षण और उत्पीड़न ने पाठकों को हतोत्साहित और अधीरता के लिए प्रेरित किया होगा।

फिर से, आप यहां मिरर रीडिंग देख सकते हैं, जिससे हमें सावधान रहना होगा। और वैसे, विशेष रूप से इस दर्पण पढ़ने से सावधान रहें, मैं कह सकता हूं, जब हम सामान्य पत्रों के बारे में बात कर रहे हैं, न कि उन लोगों के बारे में जिनमें कम से कम पॉल के अधिकांश पत्र शामिल हैं, जो स्पष्ट रूप से विशिष्ट मंडलियों और इसी तरह के लिए निर्देशित थे। इन सामान्य पत्रों में, आपके पास उस प्रकार की विशिष्टता नहीं है, कम से कम स्पष्ट रूप से नहीं, विशेष चर्चों के संदर्भ में जिन्हें यहां संबोधित किया गया होगा।

और इसलिए, आपको इस संभावना के लिए जगह छोड़नी होगी कि, उदाहरण के लिए, जेम्स एक सच्चा सामान्य पत्र है, कि इसे विभिन्न चर्चों में भेजा जाता है, और वह जिस बारे में बात कर रहा है वह शायद संभावित समस्याएं या चीजें मानता है जो वह सोचता है सभी ईसाइयों के लिए सुनना और जानना महत्वपूर्ण है, लेकिन विशेष रूप से चर्चों की स्थिति में विशिष्ट समस्याओं से प्रेरित नहीं हैं। दूसरी ओर, यह इस बात से प्रेरित हो सकता है कि वह कम से कम इन स्थानों में से कुछ में एक निश्चित विशिष्ट समस्या मानता था जहां वह जानता था कि यह पत्र होगा, जहां वह जानता था कि इसे प्राप्त किया जाएगा। कई गंभीर समस्याएँ इन पाठकों पर ईसाई जीवन के प्रभाव को पढ़ती हैं, कम से कम वास्तव में या संभावित रूप से, जिसमें ईश्वर के अच्छे उपहारों की अनदेखी करते हुए समस्याओं को ईश्वर पर थोपने का प्रलोभन, विश्वास को कार्रवाई से अलग करने की प्रवृत्ति, ईसाई सभाओं में भाग लेने वाले अमीरों के प्रति दिखाया गया पक्षपात शामिल है। और ईसाई फ़ेलोशिप को नष्ट करने की धमकी के साथ क्रोधित और दुष्ट निंदनीय भाषण, और समग्र रूप से पुस्तक से संबंधित अन्य प्रमुख धारणाएँ, यहाँ बस कुछ ही बातें हैं।

एक टोनर वातावरण अक्सर काफी मददगार होता है। हम बाद में बात करने जा रहे हैं जब हम टोनर वातावरण की भूमिका, किताबों की भावना या अनुच्छेदों की भावना के बारे में व्याख्या की प्रक्रिया को देखेंगे, और यह वास्तव में उनकी व्याख्या को कैसे सूचित कर सकता है। मेरा मानना है कि इस पुस्तक की विशेषता क्रोध और नम्रता के बीच द्वंद्व है।

पाठक को लेखक की ओर से धार्मिक आक्रोश की सफेद गर्मी महसूस होती है। क्या आप दिखाना चाहते हैं, आप उथले आदमी हैं, वह 220 में कहते हैं, लेकिन देहाती चरवाहे की गर्म सौम्यता को भी महसूस करते हैं। मेरे प्यारे भाइयों, धोखा मत खाओ।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि प्रकृति के कई संदर्भ हैं, और जेम्स के चित्र, सामान्य तौर पर, काफी ज्वलंत हैं। तो बिल्कुल स्पष्ट रूप से, जेम्स भगवान के कार्यों, प्रकृति में भगवान के रहस्योद्घाटन और जिसे हम विशेष रहस्योद्घाटन कह सकते हैं, उनके शब्द और सुसमाचार के माध्यम से भगवान के रहस्योद्घाटन के बीच एक संबंध देखते हैं। तो यह वास्तव में जेम्स का सर्वेक्षण होगा।

यह वास्तव में एक ब्रेक के लिए रुकने का एक अच्छा बिंदु हो सकता है।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 9 है, पुस्तक सर्वेक्षण, जेम्स।